हेप्पी न्यू ईयर
ईस्लाम की नजर में।

मुअल्लीफ
मुफ्ती इमरान इस्माइल मेमन
उस्ताद ए दारुल उलूम रामपुरा, सूरत।

फेहरिस्ते मज़ामीन

म्सअला नंबर		पेज नंबर
१	गैरों के तरीके पर मत चलो।	५
२	हैप्पी न्यू ईयर कहना।	७
३	मेर्री क्रिसमस कहने का हुक्म।	८
४	क्रिसमस डे में सांताक्लॉस बनना।	९
५	सांताक्लॉस की टोपी और लिबास वग़ैरह बेचने का हुकम।	१०
६	न्यू ईयर मनाना।	१२
७	नशे के दुन्यवी नुक़सानात।	१५
८	नशे के उखरवी नुक़सानात।	१७

पेश लफ्ज़

अल्हमदुलिल्लाह मसाइल का सिलसिला "आज का सवाल " के उनवान से ८ आठ साल से जारी है इस में तेहवार,हालत और मव्के की मुनासिबत से भी मसाइल आते रहते है।और थोड़ा थोड़ा कर के एक ही मवजू पर बहोत से मसाइल को अल्लाह ने जमा करा दिया बाज दोस्तों ने खाहिश की के इन मसाइल को पी.डी.एफ. की शकल में जमा कर के शोशयल मीडिया पर आम कर दिया जाए ताके लोगों का फायदा उठाना और फाइदा पहुंचाना आसान हो जाए । लिहाजा अल्लाह पर तवक्कुल कर के ये काम शुरू कर दिया गया है।

दुआ फरमाए अल्लाह तआला इस सिलसिले को मुकम्मल फरमाए और बंदे और बंदे वालीदैन असातीजाह,खुसूसन बंदे के पिरो

मुर्शीद हजरत मुफ्ती अहमद खान पूरी दामत बरकातुहुम ये खिदमात उन की तवज्जुह और दुआ का नतीजा है।(अल्लाह उन के साए को हम पर और उम्मत पर आफियत के साथ ता देर काईम रखे) और तरजमे में तावून करने वाले मेरे दोस्तों के हक में सदह ए जारिया और नजात का जरिया बनाए।किसी को ये रिसाला छापना हो तो ना चीज की तरफ से इजाज़त हैं।

अखीर में नाजीरीन से दरखास्त है के उस में कोई गलती मालुम हो या कोई मुफीद मशवरा तो बंदे मूततले करे जजाकल्लाह।

:: अहकर ::

इमरान इस्माइल मेमन

२२ रबीउल आखर १४४४ हिजरी

१७ डिसेम्बर २०२२

♦ गैरों के तरीके पर मत चलो।

कुर्आन का पैगाम

أَعوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطانِ الرَّجيم

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾

तरजमह

इमान वालों इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के नक्शे कदम पर मत चलो बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है

तफ़सीर

अब्दुल्लाह इब्ने सलाम वगैरा सहाबा पहले यहूदी थे फिर मुसलमान हुए यहूदी के नजदीक सनीचर का दिन काबिले ताझीम था और ऊंट का गोश्त और दूध पीना हराम था तो उन्होंने सोचा कि इस्लाम में सनीचर के दिन की ताझीम करना मना नहीं है तो हम ताजिम करें और ऊंट का गोश्त और दूध पीना वाजिब नहीं है तो उस से परहेज करे ऐसा करने में दोनों शरीअत पर अमल हो जाएगा इस

पर आयत नाजिल हुई कि जब तुम इस्लाम ले आए तो इस्लाम के तमाम तोरो-तरीक पर अमल करो किसी दूसरी शरीअत के किसी भी चीज पर अमल मत करो इस्लाम मुकम्मल झाब्तए हयात है उसमें अकाइद,इबादात, मुआशरत, मुआमलात, अखलाकियात, पर्सनल लाइफ, इजतिमाइ जिंदगी हर शोबे की मुकम्मल रहनुमाई मौजूद है हमें किसी दूसरे मजहब के तरीके में कोई फायदा देखते हुए या अपन अक्ल से अच्छा समझते हुए उसे इख्तियार न करें। इस आयत ने बीद्अत और गैरों के तरीके पर चलने का दरवाजा बंद कर दिया है इससे बरेलवी उलेमा की बात पर चलने की और गैरों के तरीके को अपनाने की बहुत अहम समझी जाने वाली दलील का जवाब हो गया कि इस्लाम ने उसे मना नहीं किया है इसलिए हम कर सकते हैं यह शैतानी दलील है जिस की बातों में न आने का इस आयत में हुक्म है शरीअत ने मना नहीं किया जैसे हुजूर सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के मिलाद पर लाइटिंग करना, सब का बर्थडे मनाना, १२ - रबीउल अव्वल पर जुलूस निकालना वगैरा यह सब गैरों के तरीके है सनीचर का दिन मनाना इस्लाम में कहां मना है यही तो अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रझीयल्लाहु तआला ने सोचा था किसी काम को अपने अक्ल से अच्छा समझते हुए उसे दिन में दाखिल करना भी बिद्अत है जैसे

क़ब्रों पर फूल, चादर चढ़ाना, दीया, अगरबत्ती करना वगैरा और लिबास, बाल खुशी,गमी के मौके पर किसी ऐसे तरीके की जिसमें गैर मजहब बल्कि शुयुन की मुशाबहत भी भी होती हो या जिसका शरइ सबूत न हो उसकी इजाजत नहीं। हमें तो गैरों के तरीकों की मुखालफत का हुक़्म है इस्लाम में खुशी और गमी का भी मुकम्मल तरीका बताया है लिहाजा हर शोअबे के दिन पर अमल करना है किसी भी शोअबे के इस्लाम को नहीं छोड़ना है।

🔰 सूरह बकरह ⭕ आयत :२०९

📗 तफसीर इब्ने कसीर, मआरीफुल कुर्आन व उस्मानी से माखुझ।

♦ हैप्पी न्यू ईयर कहना।

मस्अला नंबर : १

➢ क्या हैप्पी न्यू ईयर, साल मुबारक कहना ना-जाइज़ और बिदअत है ?

➢ क्या इसमें गैरों से मुशाबेहत नहीं ?

जवाब

حامداً و مصلیا و مسلما

हैप्पी न्यू ईयर कहने में नसारा-खिस्त्री-क्रिस्चियन क़ौम से मुशाबेहत है लिहाज़ा ना-जाइज़ है।

📗 किताबुल फतावा ६/१२५ से माखूज़.

واللہ اعلم بالصواب

♦ मेर्री क्रिसमस कहने का हुक्म।

म्सअला नंबर : २

➢ मेर्री क्रिसमस का माना बाज़ कहते है के "मुबारक हो खुदा को बेटा हुवा है" होता है, के तो क्या ऐसा कहने से काफिर या मुशरिक हो जायेगा ?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

मेर्री के माने ख़ुशी, क्रिष के माने मसीह-ईसा, मस् के माने जमा होना, पूरा माना हुवा ईसा की ख़ुशी में जमा होना, या'नी उनकी विलादत की ख़ुशी में जमा होना.

आप ने जो बताया वही उस का लफ़्ज़ी तर्जमा नहीं होता, लेकिन ऐसा कहने में उनका यही अक़ीदह और मक़सद छुपा होता है;

लिहाज़ा लफ़्ज़ी तर्जमा कुफ्र का न होने की वजह से कुफ्र से बचाने ने की ये तावील मव्जूद है, इसलिए इस का कहने वाला काफिर या मुशरिक तो न कहा जायेगा लेकिन कुफ्र के मा'ना पैदा होने का

अंदेशा -खतरा होने की वजह से ऐसा कहने से बचना ज़रूरी है और मुशाबेहत-कॉपी होने की वजह से सख्त गुनेहगार होगा.

📗 माखूज़ अज मालाबुद्दामिनहु व ऑक्सफ़ोर्ड डिक्सनरी.

واللہ اعلم بالصواب

♦ क्रिसमस डे में सांताक्लॉस बनना।

म्सअला नंबर : ३

➢ क्रिश्मस डे क़रीब आता है तो स्कूल में फंक्शन होता है, उस में हमारे बाज़ मुस्लिम बच्चों को सांताक्लॉस का रूप बनाने को कहा जाता है, और बहोत सो को उस की टोपी पहनाई जाती है, तो क्या बचचे ये लिबास इस्लामी ऐतिबार से पहन सकते है ?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

इस्लामी शरीयत में गैर क़ौम से मुशाबेहत इख़्तियार करने की मुमानिअत-मना होना आया है, हदीस शरीफ में है जिस ने जिस क़ौम की मुशाबेहत-कॉपी इख़्तियार की उस का हश्र क़यामत में ज़िंदा किया जाना उसी के साथ होगा.

क्रिश्मस डे- (नाताल) नसारा का तेहवार है, उस में सांताक्लॉस का लिबास इख़्तियार करना उन की मज़हबी रस्म है,

लिहाज़ा सांताक्लॉस का रूप इख़्तियार करने की या उस की टोपी पहनने की बच्चों को भी इजाज़त न होगी, इस से उन के मज़हब का रंग उन पर चढ़ता है, और उन की गलत तरबियत होती है,

जिस का गुनाह तवज्जुह न देने की वजह से माँ बाप को होता है, लिहाज़ा उस से अपनी अवलाद को बचाना ज़रूरी है.

📗 माखूज़ अज मजमउज़्ज़वाएद ५/१६९।

♦ सांताक्लॉस की टोपी और लिबास वग़ैरह बेचने का हुकम।

म्सअला नंबर : ४

- सांताक्लॉस की टोपी और लिबास वग़ैरह बेचने का हुकम क्या है।
- हमारे वालिद साहब दुकान पर सांताक्लॉस का लिबास, दिवाली के दिये, लाइटिंग, आँगन के रंग, पूजा की घंटी, सिन्दूर बेचते है,
- कया ये चीज़ें बेचना जाइज़ है ? और उस से हासिल होने वाली आमदनी हलाल है ?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

इन तमाम चीज़ों का जाइज़ ईस्तिअमाल भी है, और ये चीज़ें दूसरे कामों में भी ईस्तिअमाल हो सकती है।

लिहाज़ा उस के नाजाइज़ ईस्तिअमाल की ज़िम्मेदारी बेचने वाले पर नहीं है, बल्के ईस्तिअमाल करने वाले पर है।

लिहाज़ा इन चीज़ों का बेचना जाइज़ और आमदनी हलाल होगी।

📕 फतावा कास्मियाह जिल्द २४ सफा ३२४ से ३२७। बा हवाला शामी और अशबाह से माखूज़

अलबत्ताह दिवाली के मोके पर इन चीज़ों के बेचने से बचना बेहतर है।

📗 किताबुंनवाज़िल १०/२२७ से माखूज़।

📗 माखूज़ अज मालाबुद्दामिनहु व ऑक्सफ़ोर्ड डिक्सनरी।

واللہ اعلم بالصواب

♦ न्यू ईयर मनाना।

मस्अला नंबर : ६

➢ न्यू ईयर मनाना या मनाने वालों को उन की लाइटिंग और आतिशबाज़ी को देखने जाना केसा है ?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

न्यू ईयर मनाना ये ईसाईयों-नसारा का तरीका है.

हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है :

जिसने जिस क़ौम की मुशाबेहत-कॉपी-नक़ल उतारी कल क़यामत में उस को उन ही के साथ उठाया जायेगा

यानि उस का शुमार भी उन ही में होगा.

क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रहमतुल्लाहि अलैहि ने मसला लिखा है के कोई शख्स दिवाली में बाहर निकले और दिवाली की (रौशनी-आतिशबाज़ी वगैरह) को देखकर कहे के कितना अच्छा तरीका है तो उस के तमाम नेक अमाल बर्बाद हो जायेंगे.

📗 माला बुददा मिनहु

इसी तरह न्यू ईयर मनाने वालों को देखने जाना भी जाइज़ नहीं, क्यों के हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे मुबारक है

के जिस ने जिस क़ौम की तादाद को बढ़ाया उस का शुमार भी उन ही में होगा। लिहाज़ा इस रात में बहार रौशनी आतिशबाज़ी देखने जाना, खाने पिने की पार्टी करना, नए साल की मुबारकबादी देना, साल की ख़ुशी मनाना, दूसरे को गिफ्ट देना, वगैरह जितने तरीके उन के तरीके है सब नाजाइज़ और ईमान को बर्बाद करनेवाले है.

इबरत के लिए एक क़िस्सा पेश करता हूँ👇👇👇

📄 नसरानीओ के तौर-तरीके पसंद करने वाले आलिम का इबरतनाक क़िस्साह 📄

हज़रात इमाम-इ-रब्बानी मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह. ने इरशाद फ़रमाया :

कानपूर में कोई नसरानी जो किसी आ'ला ओहदे पर था वह मुसलमान हो गया था, मगर असलिय्यत छुपा राखी थी, उसका तबादला (ट्रांसफर) किसी दूसरी जगह हो गया, उसने उन मौलवी साहब को जिससे उसने इस्लाम की बातें सीखी थी अपने तबादला से मुत्तले' किया (इत्तेला दी) और तमन्ना की के किसी दीनदार शख्स को मुझे दें, जिससे इल्म हासिल करता रहूं, चुनांचे मौलवी साहब ने

अपने एक शागिर्द को उनके साथ कर दिया, अरसे बाद ये नसरानी (जो मुस्लमान हो चूका था) वो बीमार हुवा तो मौलवी साहब के शागिर्द को कुछ रुपये दिए और कहा के जब में मर जाऊं और ईसाई जब मुझे अपने क़ब्रस्तान में दफ़न कर आये तो रात को जा कर मुझे वहां से निकलना और मुसलमानो के क़ब्रस्तान में दफ़न कर देना, वैसा ही हुवा, जब मौलवी साहब के शागिर्द ने हस्बे वसिय्यत जब क़ब्र खोली तो देखा के उसमे वो नसरानी नहीं अलबत्ता वो मौलवी साहब पड़े हुवे है, तो सख्त परेशां (शर्मिंदा) हुवा के ये क्या माज़रा है..!

मेरे उस्ताद यहां कैसे..!

आखिर दरयाफ्त से मालूम हुआ के मौलाना साहब नसरानी के टोरो तरीक़ो को पसंद करते थे और उसे अच्छा जानते थे.

📘 इर्शादते हज़रात गंगोही रह. सफा ६५

मेरे भाइयो ये मौलवी साहब सिर्फ गैरों के तरीकों को पसंद करते थे उस पर चलते नहीं थे, तो अल्लाह ने दुनिया ही में जिसका तरीक़ा उनको पसंद था उसके साथ हश्र कर दिया, तो गैरों के तरीकों पर शौक़ से चलते है बल्कि उस पर नाज़ करते है तो हमारा क्या हश्र होगा..!

सोचोऔर अपनी अवलाद भाई बहन दोस्त अहबाब को समझाइये, या कम से कम ये मेसेज भेजकर या पढ़कर सुनकर उन को इन गैरों की ख़ुशी में शिरकत से रोकें

👏🏻 अल्लाह हमें तौफ़ीक़ दे.आमीन.

واللہ اعلم بالصواب

♦ नशे के दुन्यवी नुक़सानात।

मस्अला नंबर : ६

➢ नशा करना कैसा है ?

➢ उस के दुनियावी और उखरवी नुक़सानात क्या क्या है ?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلیا

नशा करना हराम है। इस के बेशुमार नुक़सानात है। चंद दुनियावी नुक़सानात पेश किये जाते है।

१। दिल की धड़कन तेज़ होना या बिलकुल ख़त्म हो जाना।

२। दिल का दौरा, हार्ट अटैक।

३। फेफड़े को नुकसान।

४। लीवर को नुक़सान।

५। हाज़मा कमज़ोर हो जाना।

६। पागलपन तरी होना।

७। नाक से खून बेहना।

८। सांस, ब्लड प्रेशर दमा की बीमारी हो जाना।

९। याद शक्ति-मेमोरी ख़त्म हो जाना।

१०। ज़्यादा करने से मौत या क़ौमे में चले जाना का खतरा।

११। ज़ुबान या आवाज़ का भारी हो जाना।

१२। मुंह के आज़ा का डैमेज हो जाना।

१३। खांसी हो जाना।

१४। मोटापा।

१५। जलद बुढ़ापा।

१६। कमज़ोरी, ताक़त का कम हो जाना।

१७। बकवास करना।

१८। जबान का ज़ाइक़ा-टेस्ट ख़त्म हो जाना।

१९। चक्कार आना।

२०। पसीना आना।

२१। गुस्सा और हमला करने का मिज़ाज बनना।

२२। जिस्म में पानी कम हो जाना।

२३। हर चीज़ से डर लगना।

२४। बेहोश हो जाना।

२५। मुकाबले की ताक़त कम हो जाना।

२६। उल्टी होना।

उखरवी नुक़सान कल पेश किये जायेंगे इंशा अल्लाह तआला।

📗 मा'रिफुल क़ुरान 👉 गुलदस्ता ए तफ़सीर से माखूज

واللہ اعلم بالصواب

♦ नशे के उखरवी नुक़सानात।

मसुअला नंबर : ७

➢ नशे के उखरवी नुक़सानात क्या क्या है ?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

शराब को अरबी में खमर कहते है, जिस का माना अक़्ल को ढांक लेना है।

हदीस में है के जिस से नशा होता है वह हराम है, और फिकह का उसूल है के हर वह नशा जिस से अक़्ल होशो हवास जाते रहे चाहे ज़यादा पिने से जाता रहे या कम पिने से न जाये, वह शराब के हुक्म में है।

हदीस में जो वईद् शराब पर आयी है वह शराब जैसे नशे पर भी फिट होती है।

१। शराब पीते वक़्त इमान दिल से निकल जाना।

(अबू दावूद शरीफ)

२। शराब पिने वाले, पीलाने वाले, ख़रीदनेवाले, बेचनेवाले और, बनाने वाले, बनवाने वाले, उठा कर ले जानेवाले, जिस के लिए उठाया जाये उस पर और उस की आम्दानी (आवक) खाये इन सब पर अल्लाह की लानत है।

(इब्ने माजाह शरीफ)

३। चेहरे का सुव्वर और बन्दर की तरह बना दिए जाने का खतरा। **(हाकिम)**

४। पत्थर की बारिष और ज़मींन में ढसा दिए जाने का अन्देशा। **(हाकिम)**

५। शराब का इमांन इस तरह छीन लिया जाता है जैसे किसी के कपडे उतार दिए जाए। **(हाकिम)**

६। शराब से तौबा न की तो जन्नत की शराब से महरूम रहेगा। **(मुस्लिम)**

७। जन्नत का उस पर हराम हो जाना। **(अहमद)**

८। जहन्नम में गौता नहर का बदबूदार कच्चा पीप जो जिनाकार की शर्मगाहो से बहता हुआ होगा वो पिलाया जाएगया।

(अबू य'अला)

९। शराबियों का जिस्म इस क़दर बदबूदार होगा के जहन्नमी लोग भी उस से परेशांन हो जाएंगे। **(इब्ने हिब्बान)**

१०। हमेशा शराब पिने वाला मरता है तो अल्लाह उस से इस तरह मुलाक़ात करेंगे जैसे मूर्ति पूजा करनेवाले (काफिर) से मुलाक़ात करते है।

११। जन्नत की खुशबु जो ५ बरस के रस्ते की दूरी पर से महसूस होती है, शराबी उस से महरूम रहेगा।

१३। एक बार शराब पिने से ४० दिन की नमाज़ क़बूल नहीं होती, अगर वह बगैर तौबा उसी हालत में मरा तो जाहिलियत की मौत मरा। **(हाकिम)**

१४। जहन्नम में तीनतुल खीबाल याने जहन्नमियों के ज़ख़्मों से निकला हुवा काच लहु (खून) पिलाया जाएग।

(इब्ने माजाह शरीफ)

📗 दोज़ख का खटका सफा १५१ से १५४ से माखूज़।

واللہ اعلم بالصواب